PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 8, ISSUE 2

हनुमानगढ एवं श्रीगंगानगर जालों में आर्थिक विकास का मानव विकास सूचकांक से तुलनात्मक अध्ययन

आत्म प्रकाश तिवारी
शोधार्थी अर्थशास्त्र विभाग,
सामाजिक विज्ञान संकाय,
मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर **(राजस्थान) भारत**

डॉ. वंदना वर्मा
सह–आचार्य,
अर्थशास्त्र
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय,
उदयपुर **(राजस्थान) भारत**

सारांश –

मानव विकास की अवधारणा और उद्देश्य लोगों की रूचियों/विकल्पों का विस्तार करना है। मानव विकास की अवधारणा आर्थिक विकास के अब तक के स्थापित केवल आर्थिक वृद्धि के आयाम के स्थान पर शिक्षा, स्वास्थ्य और आय के समावेशी एकीकृत विकास की पक्षधर है। मानव विकास की व्यूह रचना इस ओर इंगित करती है कि बढ़ती हुई प्रति व्यक्ति आय मानव विकास के लिए आवश्यक शर्त है लेकिन केवल मात्र यही पर्याप्त नहीं है। बढ़ती हुई प्रति व्यक्ति आय के साथ स्वास्थ्य, शिक्षा एवं लोगों की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि हेतु निवेश करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। साथ ही परिसम्पत्तियों व आय के समान वितरण, सुव्यवस्थित सार्वजनिक व्यय और विकास की प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी को बढ़ाए जाने की भी आवश्यकता पर भी जोर दिया गया है। मानव विकास सूचकांक विकास को मापने का ऐसा साधन है। जिसमें आर्थिक वृद्धि (जिसे सकल घरेलू उत्पाद के द्वारा मापा जाता है) को मापने के सीमित दृष्टिकोण के स्थान पर मानव प्रगति व मानव को उपलब्ध विकल्पों के आधार पर मापा जाता है। मानव विकास सूचकांक के द्वारा राष्ट्र, राज्य व जिला स्तरीय मानव विकास सम्बन्धी उपलब्धियों को मापा जाता है।

मानव विकास सूचकांक जिलों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को दर्शाता है एवं चुनौतियों की पहचान के लिए, जेण्डर एवं वंचित वर्गो की स्थिति पर विषेष दृष्टि रखकर, प्रस्तुत सूचकांक में शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका एवं महिला विकास का अध्ययन किया गया है। सूचकांक को तैयार करने में विभिन्न सूचकों का गहन अध्ययन किया गया है, जिससे अब तक की स्थिति, कमी तथा चुनौतियों की

जानकारी प्राप्त हुयी है। उपलब्ध सूचकों के आधार पर विकास सूचकांक की गणना कर पिछड़ी हुयी पंचायत समिति एवं अन्तिम छोर पर ग्राम पंचायत तक की पहचान की गयी है जो कि अपने आप में एक सर्वोच्च प्रयास है। सूचकांक जिलों के विकास के लिए आने वाले नियोजनों में एक नई पहल प्रदान करेगा तथा यह सूचकांक आमजन की सामाजिक एवं आर्थिक विकास की चुनौतियों की ओर ध्यान आकृष्ट करेगा।

शब्द संकेत – आर्थिक विकास, मानव विकास सूचकांक

परिचय –

मानव विकास लोगों की स्वतन्त्रता और उनकी क्षमताओं का विस्तार है। मानव विकास का तात्पर्य यह भी है कि कैसे मानव अपने जीवन को समाजोपयोगी व मूल्यवान बनाकर अपनी क्षमताओं का प्रयोग करते हुए स्वयं के व राष्ट्र के लिए सहायक और उपयोगी बन सकता है। मानव विकास की अवधारणा आर्थिक विकास के आयाम के स्थान पर शिक्षा, स्वास्थ्य के समावेशी एकीकृत विकास के पक्षधर है। मानव स्वयं भी एक प्रमुख संसाधन है। उत्पादन के कारकों में मानवीय श्रम एक प्रधान कारक होता है। मानव केवल शरीरिक श्रम द्वारा ही उत्पादन नहीं करता, वरन् मानसिक शक्तियों को प्रयोग करके भी आर्थिक क्रियाएं करता है। किसी प्रदेश या राष्ट्र की जनता के शारीरिक और मानसिक क्षमताओं के योग को उस प्रदेश या राष्ट्र की मानवीय शक्ति कहा जाता है। इसी को मानव संसाधन भी कहते हैं। इसलिए मानव संसाधन एक महान संसाधन है जो प्राकृतिक तत्वों को अपने ज्ञान एवं कौशल के विकास के द्वारा संसाधन रूप में उपयोग करता है। वह संसाधनों का निर्माता एवं उपभोक्ता दोनों है, जो एक भौगोलिक कारक संसाधन के रूप में सम्मिलित होकर कार्य करता हैं। मानव संसाधन में किसी निश्चित इकाई क्षेत्र में रहने वाली मानव जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक राजनीतिक संगठन, वैज्ञानिक तथा तकनीकी स्थिति जैसी विशेषताऐं सम्मिलित हैं।

मानवीय विकास सूचकांकः–

मानव विकास रिपोर्ट के संस्थापक अर्थशास्त्री श्री **महबूब उल हक** के अनुसार विकास का बुनियादी उद्देश्य लोगों की रूचियों/विकल्पों का विस्तार करना है। सिद्धान्त रूप में ये विकल्प अनन्त हो सकते हैं तथा समय के साथ बदल सकते हैं। मानव विकास को आम तौर पर आर्थिक वृद्धि के साथ जोड़कर देखा गया है, परन्तु यह सही नहीं है। जबकि मानव विकास लोगों की ज्ञान अभिवृद्धि तक पहुँच, बेहतर पोषण एवं स्वास्थ्य सेवाएं, अधिक सुरक्षित आजीविका, शारीरिक हिंसा एवं अपराध के विरूद्ध सुरक्षा, संतोषजनक आरामदायक जीवन, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्वतंत्रता तथा समुदाय की गतिविधियों में भाग लेने की भावना हेतु लोगों को सक्षम बनाकर उन्हें विकल्प उपलब्ध कराना है। विकास का उद्देश्य लोगों के लिए दीर्घ, स्वस्थ और रचनात्मक जीवन का आनन्द लेने के लिए अनुकूल माहौल बनाना है।

मानव विकास सूचकांक मुख्य रूप से तीन आयामों के समेकित माप को दर्शाते हैंः–

1. दीर्घ जीविता– (दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन–जिसे जीवन प्रत्याशा के द्वारा मापा जाता है),
2. ज्ञान– (शिक्षा को प्रौढ़ साक्षरता एवं संयुक्त सकल विद्यालय नामांकन अनुपात के द्वारा मापा जाता है), और
3. उत्कृष्ट जीवन स्तर– (वास्तविक समायोजित की गई प्रति व्यक्ति आय अथवा प्रति व्यक्ति क्रय शक्ति के द्वारा मापा जाता है)

मानवीय विकास सूचकांक की गणना –

H.D.I. = 1/3 (आय सूचकांक**) + 1/3 (**स्वास्थ्य सूचकांक**) + 1/3 (**शिक्षा सूचकांक**)**

''नवीनतम वैश्विक मानव विकास प्रतिवेदन 2019''

वर्ष 2019 के आधार पर तैयार किए गए मानव सूचकांकों के अनुसार भारत के सूचकांक का मूल्य 0.640 है एवं भारत 130 वें स्थान पर रहा । 189 देशों में से नार्वे 0.953 मानव विकास सूचकांक मूल्य के साथ सर्वोच्च स्थान पर है तथा 0.354 मानव विकास मूल्य के साथ नाइजर निम्नतम 189 वें स्थान पर है। राजस्थान में मानव विकास के क्षेत्र में अब कुछ प्रगति हुई है। भारत के प्रमुख 15 राज्यों में राजस्थान 1995 में जहाँ 0.432 मानव विकास सूचकांक मूल्य के साथ 22 वें स्थान पर था, वह 2017 में 0.621 मानव विकास सूचकांक मूल्य के साथ 20वें स्थान पर आ गया है। राजस्थान के मानव विकास प्रतिवेदन के अपडेट के अनुसार जिलों में श्रीगंगानगर प्रथम एवं डूंगरपूर अन्तिम स्थान पर है। श्रीगंगानगर जिले का मानव विकास सूचकांक 1999 में 0.656 था तथा 2008 में 0.809 हो गया है। साथ ही श्रीगंगानगर जिले का राजस्थान के मानव विकास प्रतिवेदन में 1999 में प्रथम तथा 2008 में भी प्रथम स्थान रहा है।

श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिलो के मानव विकास सूचकांक **का तुलनात्मक अध्ययन**

जिला	शिक्षा सूचकांक	स्वास्थ्य सूचकांक	आय सूचकांक	मानव विकास सूचकांक	क्रमांक
भारत	**0.556**	**0.751**	**0.627**	**0.644**	**130**
राजस्थान	**0.755**	**0.735**	**0.640**	**0.710**	**20**
गंगानगर	0.787	0.816	0.825	0.809	**1**
हनुमानगढ़	0.765	0.846	0.673	0.761	**5**

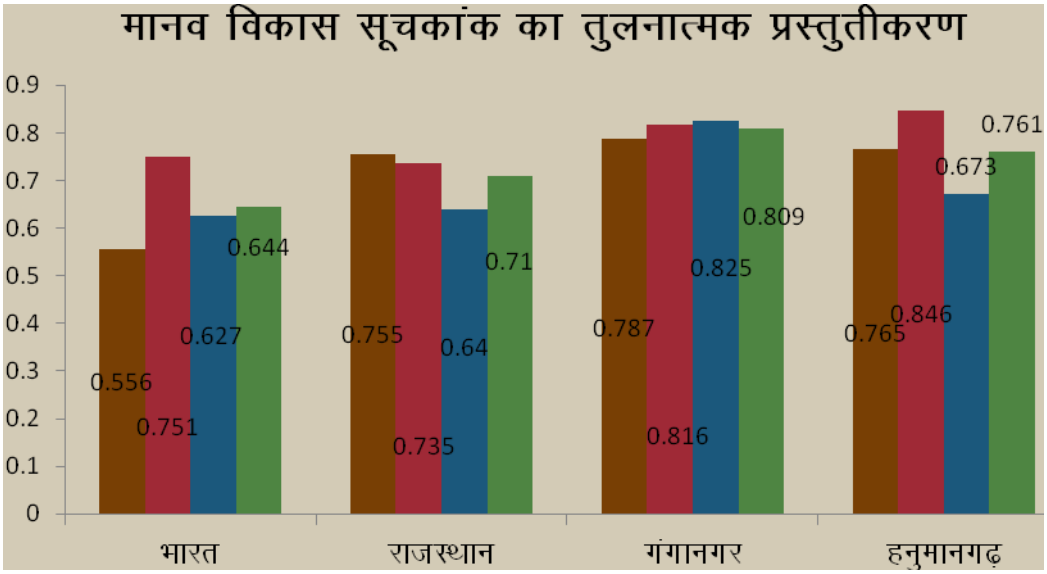

(स्त्रोत – राजस्थान का मानव विकास प्रतिवेदन)

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि श्रीगंगानगर जिले का मानव विकास सूचकांक 2008 के अनुसार 0.809 व हनुमानगढ़ जिले का मानव विकास सूचकांक 0.761 रहा। राजस्थान के 33 जिलों में श्रीगगांनगर जिले का प्रथम स्थान, हनुमानगढ़ जिले का पांचवां स्थान तथा डूंगरपूर जिले का 32 वाँ स्थान रहा। जनसंख्या घनत्व में भी श्रीगंगानगर जिले का स्थान राजस्थान में प्रथम है तथा अन्तिम स्थान पर करौली जिला है। शिक्षा सूचकांक की दृष्टि से राजस्थान में प्रथम स्थान पर कोटा जिला है जिसका सूचकांक 0.875 है। श्रीगंगानगर जिले का सूचक राजस्थान में 7 वाँ स्थान है व हनुमानगढ़ जिले का राजस्थान में 10 वाँ स्थान है। श्रीगगांनगर जिले का शिक्षा सूचकांक 0.787 व हनुमानगढ़ जिले का शिक्षा सूचकांक 0.765 है। सबसे कम शिक्षा सूचकांक बांसवाड़ा जिले का 0.630 है। स्वास्थ्य सूचकांको को लेने पर प्रथम स्थान बीकानेर जिले का रहा व हनुमानगढ़ जिले का तृतीय स्थान है ,श्रीगंगानगर जिले का 5 वाँ व डूंगरपूर जिले का अन्तिम स्थान है बीकानेर जिले का स्वास्थ्य सूचकांक 0.863, हनुमानगढ़ जिले का स्वास्थ्य सूचकांक 0.846 है, श्रीगंगानगर जिले का स्वास्थ्य सूचकांक 0.787 रहा। साथ ही आमदनी का सूचकांक सर्वाधिक राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले का 0.825 है और सबसे कम आमदनी सूचकांक चूरू जिले का है जो 0.226 रहा एवं हनुमानगढ़ जिले का आय सूचकांक 0.673 है व राज्य में 9 वाँ स्थान है।

दोनों जिलों के समस्त मानवीय सूचकांक के अध्ययन से आर्थिक विकास के स्तर को ज्ञात किया है। दोनों जिलों का आर्थिक विकास मानवीय विकास पर निर्भर है। मानव आर्थिक विकास पर निर्भर है। मानव आर्थिक विकास के लिए जो प्रयास करता है, उनका उद्देश्य देश के लोगों का जीवन

स्तर ऊंचा उठाना है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में मानव की भूमिका साधन और साध्य दोनों ही रूपों में महत्वपूर्ण है क्योंकि जनशक्ति राष्ट्र की सम्पदा है।

आर्थिक विकास के लिए कृषि का मजबूत आधार आवश्यक है क्योंकि जिले के नागरिकों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है। आर्थिक विकास के कारण निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति हुई है। औद्योगीकरण किसी देश के आर्थिक विकास के लिए एक प्रकार की संजीवनी है। उद्योग व व्यापार के विकास के द्वारा ही जिले के निवासियों की वास्तविक आय में वृद्धि हो गई और निवासियों का आर्थिक स्तर ऊंचा उठा है।

जिन राज्यों व जिलों की जनसंख्या अधिक होती है वहां के उत्पादकों को एक स्वाभाविक लाभ होता है, जिससे वह अधिक से अधिक वस्तु का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। फलतः रोजगार तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। यह क्रम इस प्रकार चलता रहता है।

मानवीय साधनों की सहायता से उत्पत्ति के विभिन्न साधनों में समन्वय स्थापित किया जा सकता है। साथ ही आर्थिक विकास में अन्य विभिन्न साधनों का प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोग उसी समय किया जा सकता है जबकि मानवीय साधन योग्यतानुसार व उचित ढंग से कार्य कर रहे हों।

आर्थिक विकास में हनुमानगढ़ व श्रीगंगानगर जिला खरा उतरा है। श्रीगंगानगर जिले का आर्थिक विकास हनुमानगढ़ जिले की अपेक्षा अधिक रहा है।

मानव विकास सूचकांक जिलों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को दर्शाता है एवं चुनौतियों की पहचान के लिए, जेण्डर एवं वंचित वर्गो की स्थिति पर विशेष दृष्टि रखकर, प्रस्तुत सूचकांक में शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका एवं महिला विकास का अध्ययन किया गया है। सूचकांक को तैयार करने में विभिन्न सूचकों का गहन अध्ययन किया गया है, जिससे अब तक की स्थिति, कमी तथा चुनौतियों की जानकारी प्राप्त हुयी है। उपलब्ध सूचकों के आधार पर विकास सूचकांक की गणना कर पिछड़ी हुयी पंचायत समिति एवं अन्तिम छोर पर ग्राम पंचायत तक की पहचान की गयी है जो कि अपने आप में एक सर्वोच्च प्रयास है।

संदर्भ–

1. आर्थिक समीक्षा, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, आयोजना विभाग, राजस्थान, जयपुर, (2001–2019)।
2. राजस्थान का मानव विकास प्रतिवेदन, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, आयोजना विभाग, राजस्थान, जयपुर, (2009)।
3. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2001–2019) जिला सांख्यिकी विभाग, श्रीगंगानगर।
4. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2001–2019) जिला सांख्यिकी विभाग, हनुमानगढ़।